हिसाब

किसी को वहम है तो किसी को अहम है
पर सच तो यह है कि ये सारी दौलत शोहरत
ताकत रुतबा और ओहदा बस ऊपर वाले का करम है।
बन्दों की नेकी और मेहनत का कुदरत ने जो दिया वो फल और ईनाम है।
पर फितरत में गर ये नेकी, ये जज्बा ही न रहे तो इन सारी नेमतों पर कोई हक नहीं रहता।
जो कुछ भी मिला है वो किसी की जागीर नहीं है।
अपने ही किए का नतीजा है गर जिंदगी की फिजा में पतझड़ नहीं चाहिए तो
यह जरूरी है कि नेकी की डगर पर चलता जा और इंसानियत को न भूल।
मेहनत के पसीने से इस चमन को सींचे जा फिर बरकतों के फूल खिलते ही रहेगें।

ललिता

प्रीत की मौली

इस रक्षा बंधन, भावों की रोली
आशीष के चावल और प्रीत की मौली है।
माना कदमों में मीलों की दूरी है
पर स्नहिलन मन में साथ सभी अपने हैं।
कुछ भीगी सी यादें हैं कुछ मुस्काती बातें हैं
ये मौली डोरी की रस्में कुछ और नहीं बस
जीवन भर स्नेह निभाने की पावन कसमें हैं
इस रक्षा बंधन भावों की रोली
आशीष के चावल और प्रीत की मौली है।

ललिता